Chapter C

# Where in the World?

(Khettpaman)

Ancient source: JeevatthanChapJ(JeevSamas).doc

Hindi Summary: **Jeevathan ChapI Prastavana to Shatkhandagam**

Vedic assertion of ***eti eti*** (*it is so, and it is also so*) invokes omniscience of know-all that is present everywhere, can materialize out of nowhere and disappear into nothing. Such attributes contradict reality and also the criteria for representation of entities. Concerns about real objects are addressed by taking count (how many?) and by ascertaining distribution in space (where?). By these criteria ***if it is everywhere then it is present nowhere***. Also something as big as space it is indistinguishable from the nothingness of the space.

*Where* relates to the surroundings of the place. In *Khettpaman*, distribution of animate beings in the two-dimensional space (surface of the human universe) is considered as:

(a) The *human accessible* world (***log*** or ***lok*** with limits) shared with Tirikkh. It is relatively small with distances and area of countable *yojan* (a unit of length equal to about 9 miles).

(b) The *conceivable world* (***jagat***) considers the surface and volume of the space that surrounds the human accessible world. The edge of this space is about 1 rajju in length.

(c) The entire "occupied" space of the universe (***savv-log***) consists of 14 worlds whose lengths, widths, area, and volume are countable in ***rajju***.

(d) As mentioned in Chapter B, one rajju is approximately $10^{14}$ yojan or about $10^{15}$ miles, or about 50 light years. The length of the occupied universe containing the 14 worlds is of the order of 1000 light years.

*****

खेत्ताणुगमेण दुविहो णिद्देसो, ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेशनिर्देश ॥१॥

**#C1**. Criteria for accessible surface (***khett***) occupied by different organisms follows from the generalization of the domains (worlds).

*

***Generalizations for the domain (C2-4)***

ओघेण मिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते, सव्वलोगे ॥ २ ॥

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभाए ॥ ३ ॥

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे, असंखेज्जेसु वा भागेसु, सव्वलोगे वा ॥ ४ ॥

ओघनिर्देशकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ २ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानके जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ३ ॥

सयोगिकेवली जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, अथवा लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण क्षेत्रमें, अथवा सर्वलोकमें रहते हैं ॥४॥

**#C2**. In general, how much surface is occupied by entities in State I? They are found in all worlds (of the universe).

**#C3**. How much surface is occupied by beings in states II through XIV? They are found in a small fraction of their worlds.

**#C4**. What is the domain of *Sajogkevali*? They are found in a small fraction of their world, on a very small surface of the world, and also (though their concerns?) in all the worlds.

**Insight**: These steps put conceptual boundaries to the worlds in relation to ones own surroundings and concerns. The last clause in C4 is open to interpretation. I interpret "all the worlds" in terms of the concerns of sajogkevali state for complete and valid knowledge related to all worlds.

*****

***In relation to the category (C5-16)***

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ५ ॥

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ६ ॥

आदेशकी अपेक्षा गत्यनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानके जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ५ ॥

इसीप्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकी जीव लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ६ ॥

**#C5**. Operationally, how much surface is occupied by the *niray* in States I through IV? They are on a small fraction of their worlds.

**#C6**. This is also the case for all the *niray* of the seven underworlds.

*

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु मिच्छादिट्ठी केवडि खेत्ते, सव्व-लोए ॥ ७ ॥

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८ ॥

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९ ॥

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १० ॥

तिर्यंचगतिमें तिर्यंचोंमें मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ७ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतकके तिर्यंच जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ८ ॥

पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंच योनिमती जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके तिर्यंच कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ९ ॥

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १० ॥

**#C7**. How much surface is occupied by *tirikkh* in States I through V? They are in all the worlds.

**Insight**: Recall that this subclass includes the air and light forms.

**#C8**. How much surface is occupied by *tirikkh* in States II through V? They are in a small fraction of their world.

**#C9.** How much surface is occupied by the independent and sexually differentiated five-sensed beings? They are in a small fraction of their world.

**#C10**.  How much surface is occupied by the dependent five-sensed beings?  They are in a small fraction of their world.

*

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥११॥

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, ओघं ॥ १२ ॥

मणुसअपज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥१३॥

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ११ ॥

सयोगिकेवली भगवान् कितने क्षेत्रमें रहते हैं? ओघप्ररूपणामें सयोगिजिनोंका जो क्षेत्र कह आये हैं, तत्प्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १२ ॥

लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १३ ॥

**#C11**.  How much surface is occupied by the independent humans of both sexes in States I through XIV? They are in a small fraction of their world.

**#C12**.  How much surface is occupied by *sajogkevali*? According to the generalization (C4) they are in a small fraction of their world, and also the whole world.

**#C13**.  What is the domain of the dependent humans? They are in a small fraction of their world.

*

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १४ ॥

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जविमाणवासिय-देवा त्ति ॥ १५ ॥

अणुदिसादि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा असंजदसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १६ ॥

देवगतिमें देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके देव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १४ ॥

भवनवासी देवोंसे लेकर उपरिम-उपरिम ग्रैवेयकके विमानवासी देवों तकका क्षेत्र इसीप्रकार होता है ॥ १५ ॥

नौ अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमान तकके असंयतसम्यग्दृष्टि देव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १६ ॥

**#C14**. How much surface is occupied by *dev* in States I through IV? They are in a small fraction of their worlds.

**#C15**. This is also the case for the domain of the *bhuvanvasi* to celestial moving and shining *dev* in each of the States I through IV.

**#C16**. What are the domains of the *dev* of the nine directions, and also those of the upper celestial reaches? They are in a small fraction of their worlds.

*****

***In relation to the senses (C17-21)***

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता केवडि खेत्ते, सव्वलोगे ॥ १७ ॥

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता य केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १८ ॥

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १९ ॥

सजोगिकेवली ओघं ॥ २० ॥

पंचिंदियअपज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥२१॥

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियजीव, बादर एकेन्द्रियजीव, सूक्ष्म एकेन्द्रिय-जीव, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव, बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ १७ ॥

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीव और उन्हींके पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १८ ॥

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगि-केवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असं-ख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १९ ॥

सयोगिकेवलियोंका क्षेत्र सामान्यप्ररूपणाके समान है ॥ २० ॥

लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भाग-प्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ २१ ॥

**#C17**. Operationally, how much surface is occupied by the one-sensed dependent and independent beings in macro- and micro-forms? They are in all the worlds.

**#C18**. How much surface is occupied by the dependent and independent beings with two-, three- and four-senses? They are found in a small fraction of their world.

**#C19**. How much surface is occupied by the five-sensed beings in States I through XIV? They are in a small fraction of their world.

**#C20**. The domain of *sajogkevali* follows from the generalization for the State (C4).

**#C21**. How much surface is occupied by the five-sensed dependents? They are in a small fraction of their world.

*****

*In relation to the body form (C22-28)*

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया, बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता, सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता य केवडि खेत्ते, सव्वलोगे ॥ २२ ॥

बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २३ ॥

बादरवाउक्काइयपज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स संखेज्जदिभागे ॥ २४ ॥

वणप्फदिकाइय-णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता केवडि खेत्ते, सव्वलोगे ॥ २५ ॥

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तैजस्कायिक वायुकायिक जीव तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तैजस्कायिक, बादर वायुकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पांच बादर कायसम्बन्धी अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तैजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक और इन्हीं सूक्ष्मोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ २२ ॥

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव, बादर अप्कायिक पर्याप्त जीव, बादर तैजस्कायिक पर्याप्त जीव और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ २३ ॥

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके संख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ २४ ॥

वनस्पतिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिकायिक बादर जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पतिकायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक बादर अपर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ २५ ॥

**#C22**. Operationally, how much surface is occupied by the various subclasses of the one-sensed macro- and micro-forms? They are in all the worlds.

**#C23**. How much surface is occupied by the various one-sensed independent macro-forms? They are in a small fraction of their worlds.

**#C24**. How much surface is occupied by the air macro-forms? They are in a countable fraction of their world.

**#C25**. How much surface is occupied by the various micro- and macro-forms in the plant and *nigod* (invisible) class? They are in all the worlds.

*

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगि-केवलि त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २६ ॥

सजोगिकेवली ओघं ॥ २७ ॥

तसकाइयअपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ताणं भंगो ॥ २८ ॥

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ २६ ॥

सयोगिकेवलीका क्षेत्र ओघनिरूपित सयोगिकेवलीके क्षेत्रके समान है ॥ २७ ॥

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका क्षेत्र पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके क्षेत्रके समान है ॥ २८ ॥

**#C26**. How much surface is occupied by the independent crawler forms in each of the States I through XIV? They are in a small fraction of their worlds.

**#C27**. Domain of (crawler form) *sajogkevali* follows from the generalization for the State.

**#C28**. Domain of dependent crawlers is the same as the domain for the five sensed dependents.

*****

***In relation to the ability to communicate (C29-42)***

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २९ ॥

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ २९ ॥

**#C29**. Operationally, how much surface is occupied by those in States I through XIII and communicate with five modes of expression and the five modes of utterance? They are in a small faction of their worlds.

*

कायजोगीसु मिच्छाइट्ठी ओघं ॥ ३० ॥

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३१ ॥

सजोगिकेवली ओघं ॥ ३२ ॥

काययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ॥ ३० ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती काययोगी जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ३१ ॥

काययोगवाले सयोगिकेवलीका क्षेत्र ओघसयोगिकेवलीके क्षेत्रके समान है ॥३२॥

**#C30**. According to the generalization, those in State I and communicate through body-form are in all worlds.

**#C31**. How much surface is occupied by those in States II through XII who communicate through the body form? They are in a small fraction of their world.

**#C32**. Domain of *sajogkevali*, who communicate through change in body form, follows from the generalization for the State.

*

ओरालियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी ओघं ॥ ३३ ॥

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३४ ॥

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ३५ ॥

सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३६ ॥

औदारिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान सर्व लोक है ॥३३॥

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती औदारिककाययोगी जीव लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ३४ ॥

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघके समान सर्वलोकमें रहते है ॥ ३५ ॥

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ३६ ॥

**#C33**. Those who communicate with gross changes in the body form are in all the worlds according to the generalization for State I.

**#C34**. Such beings in States II through XIII are in a small fraction of their world.

**#C35**. Beings that communicate with gross changes in the body form mixed with other forms are in all domains of their world according to the generalization for State I.

**#C36**. How much surface is occupied by the above (C35) in each of the States II through XIII? They are in a small fraction of their world.

*

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३७ ॥

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३८ ॥

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ३७ ॥

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमे मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ३८ ॥

**#C37**. How much surface is occupied by those in States I through IV who communicate incoherently with distorted body form? They are in a small fraction of their world.

**#C38**. How much surface is occupied by those in State I, II or IV and communicates incoherently with distorted body form? They are in a small fraction of their world.

*

आहारकायजोगीसु आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३९ ॥

आहारकाययोगियोंमें और आहारमिश्रकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ३९ ॥

**#C39**. How much surface is occupied by those in State VI who communicate through changes in the internal body form? They are in a small fraction of their world.

*

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी ओघं ॥ ४० ॥

सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्माइट्ठी ओघं ॥ ४१ ॥

सजोगिकेवली केवडिखेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु सव्वलोगे वा ॥ ४२ ॥

कार्मणकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघमिथ्यादृष्टिके समान सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ४० ॥

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीव ओघके समान लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ४१ ॥

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली भगवान् कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यात बहु भागोंमें और सर्वलोकमें रहते हैं ॥ ४२ ॥

**#C40**. According to the generalization those in State I and communicate through action form are in all domains.

**#C41**. According to the generalization, surface occupied by those in State II or IV and communicate through action form are in a small fraction of their world.

**#C42**. How much surface is occupied by *sajogkevali*? They are in a small fraction of their world, and also all the worlds.

*****

***In relation to pain and pleasure response (C43-46).***

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टी केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४३ ॥

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ४३ ॥

#C43. Operationally, those in States I through VIII with pain and pleasure response occupy how much surface? They are in a small fraction of their world.

*

णवुंसयवेदेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥४४॥

नपुंसकवेदी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका क्षेत्र ओघक्षेत्रके समान है ॥ ४४ ॥

**#C44**. Domains of those in States I through VIII with ambivalence towards pain and pleasure follow from the generalization for the State.

*

अपगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४५ ॥

सजोगिकेवली ओघं ॥ ४६ ॥

अपगतवेदी जीवोंमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके अवेदभागसे लेकर अयोगि-केवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ४५ ॥

अपगतवेदी सयोगिकेवलीका क्षेत्र ओघके समान है ॥ ४६ ॥

**#C45**. How much surface is occupied by those without pain or pleasure response in States IX through XIV? They are in a small fraction of their world.

**#C46**. How much surface is occupied by *sajogkevali* without pain and pleasure response? They are in a small fraction of their world, and in all the worlds.

*****

***In relation to the passions (C47-50)***

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ४७ ॥

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४८ ॥

णवरि विसेसो, लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ४९ ॥

अकसाईसु चदुट्ठाणमोघं ॥ ५० ॥

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभ-कषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ॥ ४७ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती चारों कषायवाले जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ४८ ॥

विशेष बात यह है कि लोभकषायी जीवोंमें सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत उपशमक और क्षपक जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ४९ ॥

अकषायी जीवोंमें उपशान्तकषाय आदि चारों गुणस्थानोंका क्षेत्र ओघ-क्षेत्रके समान है ॥ ५० ॥

**#C47**. Operationally, according to the generalization for the State, those in State I with anger, pride, illusion and greed are in all the worlds.

**#C48**. How much surface is occupied by those with passions in each of the States II through VIII? They are in a small fraction of their world.

**#C49**. In particular, how much surface is occupied by the greedy in State IX? They are found in a small fraction of their world.

**#C50**. Surface occupied by those without passions follows from the generalization for States IX through XII.

*****

***In relation to the ability to understand (C51-57)***

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ५१ ॥

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ५२ ॥

विभंगण्णाणीसु मिच्छादिट्ठी सासणसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ५३ ॥

आभिणिबोहिय-सुद-ओहिणाणीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ५४ ॥

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ५५ ॥

केवलणाणीसु सजोगिकेवली ओघं ॥ ५६ ॥

अजोगिकेवली ओघं ॥ ५७ ॥

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानियोंमें मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ॥ ५१ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानियोंका क्षेत्र ओघ-सासादनसम्यग्दृष्टिके समान लोकका असंख्यातवां भाग है ॥ ५२ ॥

विभंगज्ञानियोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ५३॥

आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञानियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ५४ ॥

मनःपर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ५५ ॥

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवलीका क्षेत्र ओघक्षेत्रके समान है ॥ ५६ ॥
अयोगिकेवली भगवान् ओघके समान लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥५७॥

**#C51**. Operationally, the domain of those in State I without innate ability to learn or unable to learn from what they hear is all the worlds according to the generalization for the State.

**#C52**. Such beings with such disabilities in State II occupy a small fraction of their world according to the generalization for the State.

**#C53.** Those in State I or II with selective cognition (partial and distorted learning) occupy how much surface? They are in a small fraction of their world.

**#C54**. How much surface is occupied by those in States IV through XII with instinctive ability to learn from what they hear or extrapolation within limits? They are in a small fraction of their world.

**#C55**. Those in States VI though XII with instinctive ability to know from the context are in a small fraction of their world.

**#C56**. Domain of *sajogkevali* with the context dependent valid knowledge follows from the generalization for the State XIII.

**#C57**. Domain of *ajogkevali* with complete and valid knowledge follows from the generalization for State XIV.

*****

***In relation to the restraints (C58-66)***

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ॥ ५८ ॥

सजोगिकेवली ओघं ॥ ५९ ॥

सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि-यट्टि त्ति ओघं ॥ ६० ॥

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अप्पमत्तसंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ६१ ॥

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदउवसमा खवगा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ६२ ॥

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चदुट्ठाणमोघं ॥ ६३॥

संजदासंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ६४ ॥

असंजदेसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ६५ ॥

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ६६ ॥

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती संयत जीव ओघके समान लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ५८ ॥

सयोगिकेवली भगवान् ओघके समान लोकके असंख्यातवें भागमें, लोकके असंख्यात बहुभागोंमें और सर्वलोकमें रहते हैं ॥ ५९ ॥

सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत ओघके समान लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ६० ॥

परिहारविशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ६१ ॥

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत उपशमक और क्षपक जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ६२ ॥

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंमें उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक चारों गुणस्थानवाले संयतोंका क्षेत्र ओघके समान है ॥ ६३ ॥

संयतासंयत जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥६४॥

असंयतोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघके समान सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ६५ ॥

असंयतोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीव ओघके समान लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ६६ ॥

**#C58.** Operationally, domain of those who exercise restraints follows from the generalizations for States VI through XIV, i.e. they are in a small fraction of their world.

**#C59**. Domain of *sajogkevali* with rational consistency follows from the generalization for State XIII.

**#C60**. Domains of those with consistency of time commitments for chores and responsibilities follow from the generalization for States VIII through XI, i.e. they are in a small fraction of their world.

**#C61**. How much surface is occupied by those with restraints on travel appropriate for State VI or VII? They are in a small fraction of their world.

**#C62**. How much surface is occupied by those with subtle restraints appropriate for State IX or X? They are in a small fraction of their world.

**#C63**. Domains of those with restraints appropriate for the dedication in States XI through XIV follow from the generalizations for the State.

**#C64**. Domain of those with occasional and chaotic restraints for State V is an uncountable fraction of their world.

**#C65**. Domain of the unrestrained in State I is all worlds according to the generalization for the sate.

**#C66**. According to the generalization, the domain of the unrestrained in States II, III or IV is a small part of their world.

*****

***In relation to the ability to recognize pattern (C67-71)***

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥६७॥

अचक्खुदंसणीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ६८ ॥

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ ६९ ॥

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ ७० ॥

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ ७१ ॥

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ६७ ॥

अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघके समान सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ६८ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय-वीतराग-छद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती अचक्षुदर्शनी जीव ओघके समान लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ६९ ॥

अवधिदर्शनी जीवोंका क्षेत्र अवधिज्ञानियोंके समान लोकका असंख्यातवां भाग है ॥ ७० ॥

केवलदर्शनी जीवोंका क्षेत्र केवलज्ञानियोंके समान लोकका असंख्यातवां भाग, लोकका असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक है ॥ ७१ ॥

**#C67**. Operationally, how much surface is occupied by those in States I through XII with eye vision? They are in a small fraction of their world.

**#C68**. Domain of those in State I without eye vision is the whole universe according to the generalization for State I.

**#C69**. Domain of those without eye vision in States II through XII is a small fraction of their world according to the generalization for the State.

**#C70**. Domain of those who extrapolate from recognized patterns follows from the section for those who discern limits and extrapolate.

**#C71**. Domain of those who recognize valid and complete pattern follows from the section for those who have complete and valid knowledge.

*****

***In relation to the motives (C72-76)***

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ७२ ॥

सासणसम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ७३ ॥

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ७४ ॥

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-छदुमत्था केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ७५ ॥

सजोगिकेवली ओघं ॥ ७६ ॥

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघके समान सर्वलोकमें रहते हैं ॥ ७२ ॥

तीनों अशुभलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि जीव ओघके समान लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ७३ ॥

तेजोलेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ७४ ॥

शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती शुक्ललेश्यावाले जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ७५ ॥

शुक्ललेश्यावाले सयोगिकेवलीका क्षेत्र ओघके समान है ॥ ७६ ॥

**#C72**. Domains of those with darker motives (black, blue and gray) in State I follow from the generalization for the State, i.e. they are in all the worlds.

**#C73**. Domains of those with the three darker motives in States II through IV follow from the generalization for the State, i.e. they are in a small fraction of their world.

**#C74**. What is the domain of those in States I through VI with colored motives? They are in a small fraction of their world.

**#C75**. How much surface is occupied by those in States I through XII with white motives? They are in a small fraction of their world.

**#C76**. Domain of *sajogkevali* with white motives follows from the generalization for the State XIII.

*****

***In relation to the potential (C77-78)***

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अजोगि-केवली ओघं ॥ ७७ ॥

अभवसिद्धिएसु मिच्छादिट्ठी केवडि खेत्ते, सव्वलोए ॥ ७८ ॥

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका क्षेत्र ओघक्षेत्रके समान है॥ ७७ ॥

अभव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ७८ ॥

**#C77.** Operationally, beings in States I through XIV have potential for rationality.

**#C78**. Those who remain in State I without realizing their potential occupy how much surface? They are in all the worlds.

*****

***In relation to rationality (C79-85)***

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठि-खइयसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठि-प्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं ॥ ७९ ॥

सजोगिकेवली ओघं ॥ ८० ॥

वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपमत्तसंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८१ ॥

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसाय-वीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८२ ॥

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ८३ ॥

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८४ ॥

मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८५ ॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ॥ ७९ ॥

सयोगिकेवली भगवान्‌का क्षेत्र ओघ-कथित क्षेत्रके समान है ॥ ८० ॥

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती वेदकसम्यग्दृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ८१ ॥

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय-वीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ८२ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ॥ ८३ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ॥ ८४ ॥

मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ॥ ८५ ॥

**#C79**. Operationally, domains of those in States IV through XIV with rational consistency follow from the generalization for the State.

**#C80**. Domain of rationally consistent *sajogkevali* follows from the generalization for State XIII.

**#C81**. What is the domain of those in States IV through VII with dormant consistency? They are in a small fraction of their world.

**#C82**. How much surface is occupied by those in States IV through XII with chaotic consistency? They are in a small fraction of their world.

**#C83**. Domain of those without discretion due to disability follows from the generalization for the State II, i.e. they are in a fraction of their world.

**#C84**. Domain of those in State III with ignorance and indifference follows from the generalization for the State, i.e. they are in a fraction of their world

**#C85**. According to the generalization for State I, domain of irrational beings with contradiction is in all the worlds.

*****

***In relation to the sensibility (C86-87)***

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाय-वीदरागछदुमत्था केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८६ ॥

असण्णी केवडि खेत्ते, सव्वलोगे ॥ ८७ ॥

संज्ञिमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीण-कषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती संज्ञी जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ८६ ॥

असंज्ञी जीव कितने क्षेत्रमें रहते है ? सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ८७ ॥

**#C86**. Operationally, how much surface is occupied by sensible beings in States I through XII? They are in a small fraction of their world.

**#C87**. What are the domains of those without sensibility? They are everywhere in all the worlds.

*****

***In relation to the ability to internalize (C88-92)***

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८८ ॥

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८९ ॥

अणाहारएसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ९० ॥

सासणसम्मादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी अजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९१ ॥

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जेसु वा भागेसु, सव्वलोगे वा ॥ ९२ ॥

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्र ओघके समान सर्व लोक है ॥ ८८ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती आहारक जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं॥ ८९॥

अनाहारकोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ॥ ९० ॥

अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और अयोगिकेवली कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ९१ ॥

अनाहारक सयोगिकेवली भगवान् कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यात बहुभागोंमें और सर्वलोकमें रहते हैं ॥ ९२ ॥

**#C88**. Operationally, according to the generalization for State I, the whole world is the domain of those who internalize.

**#C89**.  How much surface is occupied by those in States II through XIII with ability to internalize? They occupy a small faction of their world.

**#C90**.  Domain of those who do not internalize follow the generalization for the State I (that is rarely).

**#C91**. How much surface is occupied by those in States II, IV or XIV and do not internalize? They are in a small fraction of their world.

**#C92**.  What is the domain of those in *sajogkevali* state and do not internalize? They are in a small fraction of their world and in small parts, and also in all the worlds.

*****

**Related Essays in Volume III (2, 5, 9, 16).**